ससुराल से मिली बकरी ने बदल दी जिंदगी

मिथलेश चौधरी • फरह

मथुरा जिले के गांव परखम में ऐसा कुछ भी नहीं जो आपको इसके बारे में जानने को मजबूर करे, मगर बकरी पालकों के लिए यह गांव सुर्खियों में है। यहां के किसान में महज एक बकरी से शुरुआत कर बच्चू सिंह एक सैकड़ा से अधिक बकरियों के मालिक बन गए। बिना किसी प्रशिक्षण और सहायता के इस किसान ने बकरी पालन को न केवल मुनाफे का कारोबार बनाया बल्कि आज वह उसकी गृहस्थी का आधार है।

गरीबी में जन्मे बच्चूसिंह पढ़ नहीं सके। मजदूरी करने में सक्षम न होने की वजह से जिंदगी की गाड़ी अंधेरे की ओर खिसक रही थी। पिता ने छोटी उम्र में ही शादी कर दी। गृहस्थी का बोझा बढ़ा तो बच्चू को चिंता और ज्यादा सताने लगी। उनके पास न तो कोई जमीन थी और न ही किराए पर जमीन लेकर खेती करने को पैसे थे। बच्चू सिंह बताते हैं कि शादी के बाद पहले रक्षाबंधन पर वह पत्नी के साथ रिवाज के मुताबिक ससुराल गए। यहां सालियों ने उनके घर में दूध की कोई व्यवस्था न होने का ताना मारा। यह बात बच्चू के ससुर ने सुन ली। ससुराल से विदा हुए तो साली ने बच्चू सिंह को एक बकरी विदा में दे दी।

बच्चू सिंह ने उस बकरी को अपने बच्चे की तरह पाला। धीरे-धीरे इस बकरी का कुटुंब बढ़ने लगा। बच्चू ने उनकी परवरिश पर ध्यान दिया। अगले दो साल में उन्हें मुनाफा होने लगा। वह पुरानी बकरी को बेच देते और नई का पालन करने लगते। आज बच्चू सिंह के पास करीब 120 बकरी हो गई है। इसी से उनकी गृहस्थी का खर्च चलता है। बच्चूसिंह बताते हैं उनकी शादी के समय घर के नाम पर एक छप्पर था।

इनसे सीखो

आज उन्होंने अपना मकान बना लिया है। बकरियों को रखने के लिए 300 वर्ग गज की जमीन खरीद कर उसमें बाड़ा बना दिया है। बच्चूसिंह ने बताया क्षेत्र में धान की फसल होने की वजह से बकरियों की चरने की समस्या आने लगी तो उन्होंने कुछ बकरी बेचकर भेड़ पालने लगे। बच्चू सिंह की जिंदगी अब सुबह 4 से लेकर रात नौ बजे तक केवल बकरी और भेड़ों के बीच में ही रहती है। घर गृहस्थी का कार्य पत्नी ओमवती देखती है। इस बकरी पालन से ही बच्चू अपने चार लड़के और एक बेटी को शिक्षा भी दिला रहे हैं। वह कहते हैं हर साल कम से कम 1 से लेकर दो लाख तक वह बकरी पालन से कमा लेते हैं।

बकरियों के मध्य बच्चू सिंह • जागरण

बकरी वाले के नाम से है मशहूर बच्चू सिंह: बच्चू सिंह अपने गांव के साथ-साथ आसपास के गांवों में भी बकरी वालों के नाम से मशहूर है। लोग उन्हें ऐसे ही पुकारते हैं।

बकरी है एटीएम

बच्चू सिंह ने बताया एटीम का नाम तो सुना है लेकिन देखा नहीं। बताया जाता है कि एटीम से जब चाहो जब पैसे ले आओ लेकिन मुझे जब जरुरत पड़ती है तो अपने घर गृहस्थी के कार्य के लिए मैं तभी एक बकरी को बेच देता हूं और अपना खर्च चला लेता हूं। सुबह और शाम में करीब 20 से 25 लीटर दूध निकल आता है। इससे घर और बच्चों की पढ़ाई का खर्च निकल आता है। अगर बकरियों में फैलने वाले रोग को उचित इलाज मिल जाए तो बकरियों की आमदनी और बढ़ जाए।

बीमार से नहीं लेते पैसे

अगर कोई बीमार आदमी बच्चू सिंह के पास बकरी का दूध लेने के लिए आता है तो बच्चू उससे पैसे नहीं लेते हैं। बच्चू सिंह कहते हैं कि बीमार आदमी को मुफ्त में दूध देने से उनकी दुआएं मिलती हैं। उन्हें इससे खुशी भी मिलती है।

01 बकरी को पालकर 120 के मालिक बने बच्चू सिंह

300 वर्ग गज में गरीब रहे बकरी पालक ने बनाया बाड़ा

02 लाख तक सालाना कमा रहे बकरी पालन से

डॉ. एम. एस. चौहान , निदेशक केंद्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान फरह मखदूम ने प्रगतिशील किसान एवं कुशल बकरी पालक बच्चू सिंह को सम्मानित किया